इकाई 18 काव्य वाचन एवं विश्लेषण : रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 रघुवीर सहाय की चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

18.2.1 रघुवीर सहाय का कवि परिचय

18.2.2 'राष्ट्रगीत' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.2.3 'पढ़िए गीता' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.2.4 'रामदास' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.2.5 'प्रतीक्षा' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.3 सर्वेश्वर दयाल सिंह की चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

18.3.1 सर्वेश्वर दयाल सिंह का कवि परिचय

18.3.2 'तुम्हारे साथ रहकर' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.3.3 'मेघ आए' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.3.4 'मैंने कब कहा' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.3.5 'हम साथ ले चलेंगे ' कविता का वाचन और विश्लेषण

18.5 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई पढ़ने के बाद आप :

- रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं से परिचित हो सकेंगें/ सकेंगी;
- रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में प्रकृति के स्वरूप के बारे में बता सकेंगे/सकेंगी;
- इन कवियों की कविताओं में निहित चिंता और चेतनाओं की चर्चा कर सकेंगे/सकेंगी;
- उल्लिखित कवियों की कविताओं में निहित काव्य सौंदर्य को उजागर कर पाएँगे/पाएँगी;
- तीनों कवियों की भाषिक और शैली संबंधी विशेषताओं को उद्घाटित कर सकेंगी/सकेंगे;
- रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की जीवन दृष्टि से परिचित हो सकेंगे/सकेंगी।

18.1 प्रस्तावना

इस इकाई के पहले आपने अज्ञेय और भवानी भाई की कविताओं में निहित चिंताओं और सरोकारों को भली–भाँति जान लिया होगा। प्रस्तुत इकाई में आप रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की चार–चार कविताओं के आधार पर उनके कवि–कर्म से परिचित होंगे। आप यह भी परिलक्षित करेंगे कि एक ही समय में कविता रचने वाले कवियों की दृष्टि में कितना अंतर होता है।

18.2 रघुवीर सहाय की चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

अब हम रघुवीर सहाय की चयनित कविताओं का अध्ययन करेंगे।

18.2.1 रघुवीर सहाय का कवि परिचय

रघुवीर सहाय (1929–1990) : अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' (1951) के कवि रघुवीर सहाय ने कविता के अलावा कहानी, निबंध, पत्रकारिता, अनुवाद आदि क्षेत्रों में भी लेखन किया है। लेकिन उनके कवि रूप की ही सर्वाधिक चर्चा होती है। यद्यपि कवि 'दूसरे सप्तक' यानी नयी कविता के दौर में कविता के संसार में जाने माने नाम के रूप में पहचाने जाते हैं तथापि उनकी कविताओं का स्वर अस्तित्ववाद और क्षणवाद से भिन्न है। बल्कि यूँ कहा जा सकता है कि इन सिद्धांतों का पुरजोर विरोधी स्वर है। उसे अपने पहले कविता संग्रह में ही अस्तित्ववाद से प्रभावित कवियों के दुःखवाद पर चोट की है। रघुवीर सहाय समकालीन कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनके कविता संग्रहों के नाम हैं–'सीढ़ियों पर धूप में', 'आत्महत्या के विरुद्ध' और 'हँसो हँसो जल्दी हँसो'। वे 'प्रतीक', 'दिनमान' आदि पत्रिकाओं के संपादन से जुड़े रहे। साठोत्तरी भारत के जीवन यथार्थ को उनकी कविताएँ रूपायित करती हैं। समतामूलक समाज की स्थापना से प्रेरित भी प्रतीत होती हैं। रघुवीर सहाय की प्रेम और प्रकृति संबंधी कविताओं में भी अतिरिक्त रोमानियत परिलक्षित नहीं होती है। कवि का दूसरा संग्रह 'आत्महत्या के विरुद्ध' अकविता काव्य आंदोलन की प्रतिक्रिया में रचित है। बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियों और नेहरू युग से मोहभंग को उकेरने में कवि को विशेष सफलता हासिल हुई है। इसमें कवि की राजनीतिक चेतना अत्यंत मुखर रूप में व्यंजित हुई है। साधारण जन को कई–कई रूपों में संवेदनात्मक धरातल पर चित्रित करना उसके कवि–कर्म का एक ध्येय रहा है। विसंगतियों और विडंबनाओं का शब्द चित्र निर्मित करने में भी कवि को विशिष्ट रूप से स्मरण किया जा सकता है। अपने समकालीन कवियों से सहाय की शब्दावली और उनका प्रयोग–कौशल, शिल्पगत अनन्यता होने के कारण उनकी कविताएँ अलग से रेखांकित की जा सकती हैं। 'लोग भूल गए हैं' कविता संग्रह पर इस कवि को 1984 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से अलंकृत किया गया था।

आइए, आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित रघुवीर सहाय की 'राष्ट्रगीत','पढ़िए गीता', 'रामदास' और 'प्रतीक्षा' शीर्षक कविताओं का वाचन करें। कविता के सही–सही वाचन से आपको उसके अर्थ और उसकी मूल चिंता और संवेदना का परिचय प्राप्त हो जाना चाहिए। फिर भी प्रत्येक कविता की पदानुसार व्याख्या आपके लिए प्रस्तुत है। अतः व्याख्या खंड को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

18.2.2 'राष्ट्रगीत' कविता का वाचन और विश्लेषण

राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत–भाग्य–विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है.

मखमल टमटम बल्लम तुरही

पगड़ी छत्र चंवर के साथ

तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर

जय–जय कौन कराता है.

पूरब–पश्चिम से आते हैं

नंगे–बुचे नरकंकाल

सिंहासन पर बैठा,

उनके

तमगे कौन लगाता है.

कौन–कौन है वह जन–गण–मन

अधिनायक वह महाबली

डरा हुआ मन बेमन जिसका

बाजा रोज बजाता है

यह कविता एक दूसरे शीर्षक 'अधिनायक' के साथ भी है। इस कविता में कवि का सत्ताधारी वर्ग के प्रति तीव्र कटाक्ष और व्यंग्य है। आजादी के पचहत्तर वर्ष बीतने को है लेकिन आम जनता की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है। आजादी राजनेताओं की मुट्ठी में सीमित होकर रह गई है। सारा सुख, वैभव, भोग–विलास राजनेता और पूँजीपति के लिए सुरक्षित कर दिए गए हैं। ऐसी स्थिति में रघुवीर सहाय की 'राष्ट्रगीत' कविता का पाठ जरूरी हो जाता है। आइए, इस कविता का पाठ फिर से करें और इसके पदों की व्याख्या के माध्यम से कवि की चिंता और उसके सरोकार को समझने का प्रयास करें।

व्याख्या :

राष्ट्रगीत में भला ———————— कौन कराता है।

उपर्युक्त कवितांश रघुवीर सहाय की कविता 'राष्ट्रगीत' से अवतरित है। इन पंक्तियों में कवि ने अधिनायक को लेकर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया है। राष्ट्रगीत में एक पंक्ति है 'जन–गण–मंगल–दायक जय हे भारत भाग्य विधाता।' इसका अर्थ है कि जन–गण के मंगल करने वाले भारत के भाग्य विधाता की जय हो।

कवि की जिज्ञासा भारत के भाग्य विधाता को ढूँढ रही है। वह पूछता है कि राष्ट्रगीत में उल्लिखित आख़िर वह 'भारत भाग्यविधाता' है कौन? वह कौन है जिसके प्रतिनिधित्व में भारत राष्ट्र का संचालन हो रहा है? वह अधिनायक कौन है जिसका गुणगान गरीब लड़का हरचरना फटी–पुरानी,

ढीली–ढाली हाफ पैंट पहने करता है? क्या हरचरना को राष्ट्रगान का महत्व भी भली–भाँति पता है?

कौन है जो मख़मल टमटम वल्लभ तुरही के साथ माथे पर पगड़ी एवं चंवर के साथ तोपों की सलामी लेकर ढोल बजवा कर अपना जयकारा लगवा रहा है? सत्ताधारी वर्ग परिवर्तित जनतांत्रिक व्यवस्था में राजसी ठाट–बाट के साथ इस उत्सव में शामिल होकर अधिनायक के रूप में अपना गुणगान करवा रहे हैं। कवि की जिज्ञासा है कि उस सिंहासन यानी मंच पर बैठा आदमी है कौन? मंच पर आसीन उस व्यक्ति को क्यों दूर–दूर से नंगे पैर एवं नरकंकाल बन चुके दुबले–पतले लोग आकर अधिनायक को तमगे और मालाएँ पहना रहे हैं? महाबली के डरे हुए लोगों से अपना गुणगान बाजा बजवाकर करवाने वाला व्यक्ति तानाशाह तो नहीं है? भूखी–प्यासी जनता का यह यशगान प्रायोजित तो नहीं है? आम आदमी का मसीहा बना हुआ यह अधिनायक क्या वास्तव में भारत भाग्यविधाता है अथवा तानाशाह? इस प्रकार के तमाम प्रश्न कविता से गुजर कर पाठकों के समक्ष खड़े हो जाते हैं। कवि ने आज के जनप्रतिनिधियों पर जबरदस्त व्यंग्य किया है। ये भारत के भाग्यविधाता तो नहीं हो सकते जिन्हें अपने देश और जनता की परवाह नहीं होती।

पूरब पश्चिम से आते ———— बाजा रोज बजाता है।

कवि रघुवीर सहाय ने कहा है कि राष्ट्रीय त्योहारों के अवसर पर सभी दिशाओं से नंगे पैर जनता आती है और उसमें शामिल होती है। दूर–दूर से नंगे पैर एवं नरकंकाल बन चुके दुबले–पतले लोग आकर अधिनायक को तमगे और मालाएँ पहना रहे हैं। महाबली के डरे हुए लोगों से अपना गुणगान बाजा बजवाकर करवाने वाला भारत भाग्य विधाता तो नहीं तानाशाह अथवा अधिनायकतंत्र का प्रतीक है जो गरीब जनता की गाढ़ी कमाई पूँजीपतियों को लाभ पहुँचाने अथवा विदेशी बैंकों में अपनी पूँजी बढ़ाने में लगा रहता है। आम जनता के सामने अपनी देशभक्त वाली छवि बनाए रखने के लिए जनता के करोड़ों रुपए विज्ञापनों में लुटाता है। देश की आम जनता गरीबी की मार से मारी जा रही है लेकिन ये प्रतिनिधि राज सत्ता और राजकीय भोग–विलास में आकंठ डूबे रहते हैं।

जन–गण–मन का अधिनायक एक नहीं है अनेक हैं। तानाशाहों की संख्या दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। वे महाबली का रूप धारण कर देश की संपूर्ण शक्ति को अपनी मुट्ठी में दबाए रखते हैं। जनता में डर, भय और आतंक भरकर अपनी स्वार्थपूर्ति में लगे रहते हैं। आम जनता राष्ट्रभक्ति के इस नए रूप को देखकर दुखी है। इसलिए राष्ट्र गान और राष्ट्रीय उत्सव के महत्व को समझने की उसकी इच्छा और रुचि समाप्त होती जा रही है। उसे ये त्योहार औपचारिक लगते हैं। बस एक खाना–पूरी। ऐसा होना जनतंत्र के लिए गहरा संकट बन सकता है।

कवि ने जनतंत्र के नाम पर पनपती तानाशाही प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है। सत्तासीन वर्ग के प्रति तीव्र आक्रोश और सर्वहारा लोगों और जनसाधारण के प्रति गहरी संवेदना अभिव्यक्त हुई है। कवि की पक्षधरता आमजन के साथ है। बोलचाल की शब्दावली का सुंदर प्रयोग किया गया है। यद्यपि कविता छोटे आकार की है परंतु इसमें आज की राजनीतिक विसंगतियों, कुरूपताओं और विद्रुपताओं का जीवंत चित्रण किया गया है।

18.2.3 'पढ़िए गीता' कविता का वाचन और विश्लेषण

बनिए सीता

फिर इन सब में लगा पलीता

किसी मूर्ख की हो परिणीता

निज घर–बार बसाइए ।

होंय कँटीली

आँखें गीली

लकड़ी सीली, तबियत ढीली

घर की सबसे बड़ी पतीली

भरकर भात पसाइए ।

रघुवीर सहाय की सर्वाधिक पढ़ी और उद्धृत की जाने वाली कविताओं में से 'पढ़िए गीता' अन्यतम है। यह मूलतः स्त्री संवेदना की कविता है। स्त्री के प्रति प्रचलित अवधारणा में निहित विरोधाभास को भी कविता में स्पष्ट देखा जा सकता है। इस कविता में कवि ने जहां एक ओर अपने युग का चित्रण किया है वहीं दूसरी ओर इस कविता से उसकी स्त्री दृष्टि का भी परिचय मिलता है। इस कवि की कविताओं में बदलते समय की रेखाओं को अंकित किया गया है। इनमें जीवन और समाज के समक्ष उपस्थित जिन ख़तरों की ओर संकेत किया गया है,वे आज अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

व्याख्या :

पढ़िए गीता ————————— निज घर–बार बसाइए।

उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ सुप्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय की 'पढ़िए गीता' कविता से अवतरित हैं। इस अंश में गीता पढ़ने, सीता बनने का आग्रह है तो किसी मूर्ख की परिणीता बनने के लिए कहा गया है। 'श्रीमद्भागवतगीता' वह ग्रंथ है जिसमें युद्ध–विरत होने वाले को युद्ध के लिए प्रेरित किया गया था। जीवन एक युद्ध है और योद्धा की भाँति जीवन जीना चाहिए। जीवन से भागना कायरता है। कवि ने व्यंग्यात्मक लहजे में समाज की समस्त स्त्री जाति से कहा है कि समाज 'गीता' पढ़ने के लिए हिदायत देता है। इस ग्रंथ में धर्म और कर्म की शिक्षा मिलती है। लेकिन व्यावहारिक जीवन में समाज स्त्री को सीता ही बने रहने का आग्रह करता है। स्त्री की शिक्षा सैद्धांतिक रहे और यह कभी व्यावहारिक जीवन में लागू न हो। अर्थात् वह वही करे जो मर्दवादी व्यवस्था को पसंद आए। व्यावहारिक जीवन में उसकी प्राप्त शिक्षा का उपयोग न हो। वह बस त्याग की प्रतिमूर्ति, समर्पित और पुरुष की अनुगामिनी बनी रहे। यह समाज स्त्री जीवन की सार्थकता को उपर्युक्त गुणों के आधार पर ही परखता है। यानी समाज को एक ऐसी स्त्री चाहिए जो अपने कर्तव्य को भली भाँति जाने –समझे। अधिकार के लिए न लड़े। गीता का ज्ञान तो प्राप्त करे लेकिन उसे व्यावहारिक जीवन के धरातल पर उतारने की कोशिश न करे। सामाजिक यंत्रणा असह्य हो जाए तो सीता की तरह रसातल में चली जाए। एक ऐसी स्त्री जो अपने अधिकार को भले समझे लेकिन बोले नहीं, मूक बनी रहे। वह उच्च शिक्षा प्राप्त होने पर भी मूक बनी रहे। वह अपनी समस्त प्रतिभा, बुद्धि आदि को परे धकेल कर चूल्हा– चौका के बर्तनों में पलीता लगाती रहे। वह घर–परिवार के झमेले में उलझी रहे। चूँकि वह स्त्री है वह पढ़ी–लिखी होने पर भी किसी मूर्ख की पत्नी बन सकती है क्योंकि हमारी सामाजिक व्यवस्था उसे उस रूप में देखना चाहती है।

समाज की सोच में निहित अंतर्विरोध स्पष्ट अनुमित है। इसे आप चाहें तो मर्दवादी सोच का षड्यंत्र भी कह सकते हैं। समाज में स्त्री की स्थिति से भी यह कविता साक्षात्कार कराती है।कवि ने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोगकिया है। आम बोलचाल की शब्दावली का सुंदर प्रयोग किया।

होंय कँटीली ———————— भरकर भात पसाइए।

कवि रघुवीर सहाय ने यहाँ समाज की स्त्री–दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि स्त्री अपनी घर–गृहस्थी को पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ सम्हालती आ रही है। हृदय में अनेक कुंठाओं को दबाए घुटती रहती है। कभी–कभी उसकी कुंठाएँ काँटों की चुभन बनकर उनकी आँखों को भिंगो देती है। दिन–रात चूल्हा–चौका में समर्पित उसका जीवन की एकरसता में व्यतीत होता है। खाना पकाते हुए भिंगी लकड़ियों के कारण उसकी आँखें गीली रहती हैं। उसकी तबियत चाहे जितनी ख़राब हो वह घर की सबसे बड़ी पतीली में भर–भर कर भात पसाती रहती है। तात्पर्य यह कि पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था में स्त्री की यह छवि सदियों से कायम है।यह व्यवस्था स्त्री जीवन की इच्छाओं, कामनाओं और अभीप्साओं को दमित और कुंठित करती आ रही है। बावजूद इसके स्त्री अपनी गृहस्थी के लिए पूर्णतः समर्पित रहती है। इस कविता में समाज की मानसिकता में निहित अंतर्विरोध और विसंगतियों को उद्घाटित करने का भी सुंदर प्रयास हुआ है। इस कविता का सौंदर्य इसकी व्यंग्यात्मकता में निहित है। स्त्री चाहे कोई भी हो समाज को उसका 'सीता रूप' ही ग्राह्य होता आ रहा है।

रघुवीर सहाय की यह कविता सबसे अधिक लोकप्रिय है। यह कविता सर्वाधिक उद्धृत की जाती है। जनसामान्य तक इससे प्रभावित होते हैं क्योंकि यह सहज ही बोधगम्य है।

18.2.4 'रामदास कविता' का वाचन और विश्लेषण

चौड़ी सड़क गली पतली थी

दिन का समय घनी बदली थी

रामदास उस दिन उदास था

अंत समय आ गया पास था

उसे बता यह दिया गया था उसकी हत्या होगी

धीरे धीरे चला अकेले

सोचा साथ किसी को ले ले

फिर रह गया, सड़क पर सब थे

सभी मौन थे सभी निहत्थे

सभी जानते थे यह उस दिन उसकी हत्या होगी

खड़ा हुआ वह बीच सड़क पर

दोनों हाथ पेट पर रख कर

सधे कदम रख कर के आए

लोग सिमट कर आँख गड़ाए

लगे देखने उसको जिसकी तय था हत्या होगी

निकल गली से तब हत्यारा

आया उसने नाम पुकारा

हाथ तौल कर चाकू मारा

छूटा लोहू का फव्वारा

कहा नहीं था उसने आख़िर उसकी

भीड़ ठेलकर लौट गया वह

मरा पड़ा है रामदास यह

देखो देखो बार बार कह

लोग निडर उस जगह खड़े रह

लगे बुलाने उन्हें जिन्हें संशय था हत्या होगी।

रघुवीर सहाय की अत्यंत चर्चित कविताओं में से 'रामदास' उल्लेखनीय है। इस कवि की रचनाओं में लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर होने वाली अव्यवस्थाओं पर तीखा व्यंग्य है। जनतंत्र, न्याय, कार्यपालिका के छद्म चरित्र को उद्घाटित करने में कवि को विशेष सफलता हासिल है। कवि ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विडंबनाओं के कारण आम आदमी की असह्य जीवन–यंत्रणा को उजागर किया है।

व्याख्या :

चौड़ी सड़क गली पतली ———————— उसकी हत्या होगी।

कवि ने यहाँ एक आम आदमी रामदास की होने वाली हत्या के परिप्रेक्ष्य में उसकी मनःस्थिति तथा परिवेश का चित्रण किया है। साथ ही समाज में प्रचलित क़ानूनी दांव–पेंच से पीड़ित जनजीवन की शोचनीय स्थिति को भी उकेरा गया है।

यह कविता रामदास की लाचारी, विवशता एवं असहाय स्थितियों से रू–ब–रू कराती है। रामदास इस कविता का शीर्षक है और नायक भी। उसे धमकी दी गयी है कि आज उसकी हत्या होगी। यह जानकर रामदास उदास हो जाता है। कवि ने यहाँ कविता का आरंभ इस होने वाली दुर्घटना का परिवेश चित्रण के साथ प्रस्तुत किया है। उसने चौड़ी सड़क, पतली गली, दिन का समय और आकाश में छाए हुए बादल की सूचना दी है। घने बादलों से परिवेश में व्याप्त एक प्रकार की भयातुर स्थिति की ओर इशारा किया है। रामदास की निस्सहायता पूरे परिवेश में समाई हुई है। उसे पता है कि उसका अंत सन्निकट है। कोई भी क़ानून, संविधान अथवा प्रशासन उसकी हत्या रोक नहीं सकता है। हमारा क़ानून आम आदमी के लिए अंधा बना हुआ है। रामदास को अपने देश के क़ानून और न्यायिक प्रक्रिया के प्रति आस्था भी थी। लेकिन उसके अनुभवों ने उसे बता दिया है कि क़ानून के प्रति उसकी आस्था का कोई मतलब नहीं रह गया है। हमारी संपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और न्यायिक व्यवस्था का प्रतिबिंब रामदास में अर्थात् उसकी मनःस्थितियों के माध्यम से स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

धीरे–धीरे चला ———————— उसकी हत्या होगी।

कवि समाज की प्रतिक्रियाहीन मौन स्थिति पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि जो शोषण, अन्याय और अत्याचार को सहजता से तटस्थता के नाम पर मूकद्रष्टा बनकर मौन साढ़े रहता है वहाँ जीवन क़हाँ होता है। ऐसा समाज मृत कहलाता है।

रामदास को अपनी हत्या की खबर थी। लेकिन इसके बावजूद वह अकेला निहत्था निकल पड़ता है। भीतर से वह डरा हुआ था। वह किसी को अपने साथ ले लेना चाहता था। लेकिन उसने कुछ सोचकर वैसा नहीं किया। अकेले ही धीरे–धीरे चल पड़ा। उसने देखा कि सड़क पर बहुत सारे लोग थे। वे सभी निहत्थे और मौन थे। हालाँकि उनमें से हर व्यक्ति को रामदास की हत्या के बारे में मालूम था। लेकिन थे सभी मौन। ऐसी स्थिति में भारतीय संविधान में नागरिक को प्रदत्त सांविधानिक, लोकतांत्रिक और प्रशासनिक अधिकारों पर सवाल खड़ा होना लाजिमी है। सत्ता अपने को बिक चुकी हो तो व्यवस्था विवश ही होगी जैसे कि रामदास के लिए है। भीड़ में से कोई भी रामदास को बचाने की कोशिश नहीं करता है। इससे पता चलता है कि हमारी पूरी व्यवस्था कितनी पतनोन्मुखी हो चुकी है।

खड़ा हुआ वह ———————— तय था हत्या होगी।

अवतरित अंश में कवि ने जनतंत्र, सत्ता और व्यवस्था का मखौल उड़ाने वाले तत्वों से हमें परिचित कराना चाहा है। रामदास अपने दोनों हाथ पेट पर रखे बीच सड़क पर खड़ा हो जाता है। वह बहुत सहमा हुआ है। बेहद सधे कदमों से वह यहाँ तक पहुँचा है। वहाँ उपस्थित सभी लोग भी सहमे हुए हैं। एक दूसरे में सिमटे हुए हैं। उन सबकी आँखें रामदास पर ही केंद्रित हैं क्योंकि सभी जानते हैं कि अब रामदास मारा जाएगा। लेकिन उनमें से किसी का साहस नहीं है कि इस हत्या को रोके। मानो वहाँ इकट्ठी हुई भीड़ चलचित्र के मूक दर्शक बने हुए हैं। किसी सनसनीख़ेज घटना के घटित होने की प्रतीक्षा में हैं। सड़क के बीचोंबीच खड़ा अकेला निहत्था, असहाय रामदास लोगों की तमाम जिज्ञासा, संशय, सवाल और उत्सुकता का केंद्र बना हुआ है। यह विडंबना ही है कि रामदास के रूप में एक जनतांत्रिक राष्ट्र में जनतंत्र के मुखिया द्वारा आम आदमी को ऐसी स्थिति में डालकर जनतंत्र का ही मखौल उड़ाया जा रहा है। रामदास की हत्या का आशय है कि जनतांत्रिक मूल्यों की हत्या है।

निकल गली से तब हत्यारा ———————— हत्या होगी।

जनतंत्र की नृशंस हत्या, निरंकुश शासन और अराजकता भरे माहौल का चित्रण करते हुए कवि ने कहा है कि हत्यारा गली से निकल कर आता है और रामदास का नाम पुकारता है। नाम तथा व्यक्ति की पुष्टि हो जाती है तो अपने हाथ साधते हुए चाकू निशाने पर साधता है। रामदास के शरीर से लहू का फव्वारा छूटने लगता है। रामदास की हत्या हो जाती है। रामदास की मृत्यु के पश्चात भी, सब लोग बस खड़े होकर देखते रहें। मानो यह कोई खेल था, तमाशा था। हत्यारे के चेहरे पर विजय रेखा खिल जाती है। मानो वह वहाँ उपस्थित लोगों को समझा रहा हो कि मैंने तो कहा ही था कि उसकी हत्या होगी। असामाजिक तत्व, गुंडे, हत्यारे जब सत्तासीन होते हैं तब वे अपने पेशे वालों से सवाल पूछने वालों को बीच रास्ते में दिन दहाड़े मरवा देते हैं। वह हत्यारा रामदास की हत्या के बाद भीड़ को ठेलते हुए लौट जाता है और रामदास का मृत शरीर वहीं पड़ा रहता है। वहाँ उपस्थित लोगों के बीच हलचल होती है। वे एक–दूसरे को रामदास का मृत शरीर इशारे से दिखाते हैं। अब वे बिल्कुल निडर खड़े हैं और उन लोगों को घटना की व्याख्या करके समझा रहे हैं जिन्हें इस हत्या को लेकर कोई संशय था।

रामदास कविता में रोज–रोज मरते लोगों की भीड़ में एक जीते–जागते व्यक्ति की विडम्बना के साक्ष्य से इस कविता का गठन हुआ है। रामदास मृतप्राय आधुनिक समाज का ठोस यथार्थ है।

लोगों की तटस्थता और निरपेक्षता का भाव रामदास की हत्या के लिये जिम्मेदार है। मनुष्य कितना संवेदनहीन और निष्क्रिय हो गया है कि किसी की हत्या भी उसके लिए महज एक सूचना बनकर रह जाती है।

नयी कविता के अन्य कवियों की भाँति, रघुवीर सहाय ने प्रतीकों, बिम्बों और मिथकों का सहारा बहुत कम लिया है। इन्होंने साधारण बोलचाल की भाषा के अति–साधारण शब्दों का प्रायः गद्यवत प्रयोग ही अधिक किया है। रघुवीर सहाय की कविता कहने के एक खास ढंग को विकसित करती है। कविता में संवाद निरंतर चलता रहता है। इस संवाद के अंदर से ही कविता का जाल फैलकर विशिष्ट अर्थ को ग्रहण करता है।

18.2.5 'प्रतीक्षा' कविता का वाचन और विश्लेषण

दूसरे तीसरे जब इधर से निकलता हूँ

देखता हूँ, अरे, इस वर्ष गुलमोहर में अभी तक फूल नहीं आया

––इसी तरह आशा करते रहना कितना अच्छा है

विश्वास रहता है कि वह प्रज्वलित रूप

मैं भूल नहीं आया ।

____

व्याख्या :

दूसरे तीसरे जब। —————— मैं भूल नहीं आया।

रघुवीर सहाय कविता लिखने के व्यक्तिगत प्रभावों की भी सफल अभिव्यक्ति करते हैं। उल्लेख किया जा चुका है कि कवि ने साधारण विषय और घटना को अनन्य ढंग से प्रस्तुत करने में सफलता हासिल की है। साधारण सी प्रतीत होने वाली घटना अथवा विषय में भी कवि की जीवन दृष्टि समाहित होती है। दरअसल जिन रचनाकारों के अपने जीवनानुभव होते हैं उस रचना का प्रभाव अधिक होता है। अपने में खोया हुआ रचनाकार और तमाम व्यस्तताओं में भी बाह्य जगत का साक्षात्कार करने और कराने वाले रचयिता की रचनाओं में अंतर आता है। रघुवीर सहाय की रचना में अंतः और बाह्य दोनों घुले–मिले रहते हैं। 'प्रतीक्षा' शीर्षक कविता इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। ।

यह कविता सीधी और सरल है। परंतु यह जीवन मूल्य से प्रेरित भी है। इसमें यथार्थ भी मौजूद है। यह बिल्कुल सत्य है कि कविता अकेले में ही सृजित होती है। कविता रचते समय कवि केवल उसी के साथ जीता है। उस समय वह बिल्कुल अकेला होता है, भले ही उसकी कविता में पूरा संसार समाया हो, पूरी दुनिया की चिन्ताएँ ओत–प्रोत हों। कवि को यह अकेलापन अन्य तमाम व्यस्तताओं के बीच भी मिल ही जाता है, भले ही वह उतनी देर के लिए औरों को अपने–आप में खोया–सा लगे। एकांत के क्षणों में वह बाह्य जगत को भुलाए नहीं बैठता है। गुलमोहर का अब तक नहीं खिलना कवि के अंतस में निराशा नहीं बल्कि आशा का भाव संचार करता है। गुलमोहर के धधकते रूप को बिना भुलाए आ जाने पर कवि को विश्वास होता है कि उसमें अब भी संवेदना जीवित है।

18.3 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

अब हम सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की चयनित कविताओं का अध्ययन करेंगे।

18.3.1 सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (1927–1983):

अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक'(1951) के कवियों में सर्वेश्वर का नाम उल्लेखनीय है। कवि की प्रारंभिक रचनाओं में अस्तित्ववाद और लोक तत्व दोनों का समानांतर प्रभाव दिखाई पड़ता है। 'दिनमान' से जुड़ने के बाद उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र की चुनौतियों को भली–भाँति समझा। उन्होंने किसी भी भाषा के विकास के स्वरूप को जानने के लिए बाल–साहित्य के विकास को आधार माना और प्रभूत मात्रा में बाल–साहित्य का भी लेखन किया। काव्य के अतिरिक्त कथा, नाटक, यात्रा संस्मरण, संपादन, अनुवाद, लेख, फीचर आदि विधाओं में उल्लेखनीय सृजन किया है। सर्वेश्वर का 'बकरी' नाटक लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनूदित हो चुका है। बहरहाल, यहाँ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के कवि रूप का उल्लेख करना हमारा उद्देश्य है। उनके कविता संग्रह हैं–काठ की घंटियाँ, बांस का फूल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द, खूँटियों पर टंगे लोग, क्या कह कर पुकारूँ, कविताएँ–1, कविताएँ–2, कोई मेरे साथ चले, मेघ आए, काला कोयल, शाम एक किसान। कहना न होगा कि सर्वेश्वर ने बड़ी मात्रा में कविताएँ लिखी हैं। 'कुआनो नदी' के प्रकाशन के साथ कवि की कविताओं में एक नया मोड़ दिखाई पड़ता है। यहाँ कवि की क्रांतिकारिता का स्पष्ट परिचय मिलता है। मानवीय गरिमा की रक्षा इस कवि की कविताओं का केंद्रीय मूल्य है। आम आदमी के प्रति कवि की प्रतिबद्धता स्पष्ट देखी जा सकती है। व्यक्ति के सुख–दुःख को बिना महत्व प्रदान किए समाज को सर्वोपरि मानना भी इन कविताओं की मूल चिंता है। 'दिनमान' में प्रकाशित 'चरचे और चरखे' स्तंभ के अंतर्गत आपके लेख विशेष लोकप्रिय रहे। सन 1983 में कविता संग्रह 'खूँटियों पर टंगे लोग' के लिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

18.3.2 'तुम्हारे साथ रहकर' कविता का वाचन और विश्लेषण

तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे ऐसा महसूस हुआ है
कि दिशाएँ पास आ गयी हैं,
हर रास्ता छोटा हो गया है,
दुनिया सिमटकर
एक आँगन–सी बन गयी है
जो खचाखच भरा है,
कहीं भी एकान्त नहीं
न बाहर, न भीतर।

हर चीज का आकार घट गया है,
पेड़ इतने छोटे हो गये हैं
कि मैं उनके शीश पर हाथ रख
आशीष दे सकता हूँ,
आकाश छाती से टकराता है,

मैं जब चाहूँ बादलों में मुँह छिपा सकता हूँ।

तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे महसूस हुआ है
कि हर बात का एक मतलब होता है,
यहाँ तक कि घास के हिलने का भी,
हवा का खिड़की से आने का,
और धूप का दीवार पर
चढ़कर चले जाने का।

तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे लगा है
कि हम असमर्थताओं से नहीं
सम्भावनाओं से घिरे हैं,
हर दीवार में द्वार बन सकता है
और हर द्वार से पूरा का पूरा
पहाड़ गुजर सकता है।

शक्ति अगर सीमित है
तो हर चीज अशक्त भी है,
भुजाएँ अगर छोटी हैं,
तो सागर भी सिमटा हुआ है,
सामर्थ्य केवल इच्छा का दूसरा नाम है,
जीवन और मृत्यु के बीच जो भूमि है
वह नियति की नहीं मेरी है।

'तुम्हारे साथ रहकर' शीर्षक कविता में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की प्रेम चेतना और संवेदना अभिव्यक्त है। कवि के लिए प्रेमिका केवल प्रेम का आलंबन नहीं है। वह कवि की चेतना, शक्ति, सामर्थ्य और स्फूर्ति को उद्‌बुद्ध करती है। प्रेमिका का साहचर्य कवि में संभावनाओं के द्वार उन्मुक्त करने में समर्थ है तथा सामर्थ्य से भरपूर करने वाला होता है। कवि के अनुसार प्रियतमा का साथ हो तो जीवन सफल और सार्थक बन जाता है।कवि का मानना है कि प्रियतमा के साथ रहकर सारी नकारात्मकताएँ सकारात्मक सोच में बदल जाती हैं। इस कविता में कवि की जीवन दृष्टि में

प्रेम का महत्व सर्वाधिक रहा है। यह प्रेम देह की परिधि को पार करते हुए जीवन के मूलमंत्र के रूप में कविता में प्रस्तुत हुआ है।

व्याख्या :

तुम्हारे साथ रहकर ———————— न बाहर न भीतर।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की बहुचर्चित कविता 'तुम्हारे साथ रहकर' से अवतरित इस अंश में कवि ने अपनी प्रेमिका को संबोधित करते हुए कहा है कि तुम्हारे साथ रहते हुए यानी तुम्हारा साहचर्य पाकर अक्सर ही मुझे महसूस होता है कि दूर–दूर तक फैली हुई दिशाएँ बिल्कुल मेरे नजदीक आ गई हैं। पहले जो रास्ता लंबा और पथरीला लगता था अब वह छोटा और सहज लगने लगा है। आशय यह कि जीवन मार्ग की कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं। चुनौतियाँ और संघर्ष पहले की तुलना में बहुत सहज और आसान प्रतीत होने लगते हैं। ऐसा भी लगता है कि पूरी दुनिया मानो सिमटकर आँगन में आ गयी है यानी मेरी पहुँच में हो गयी है। यहाँ लोगों की भीड़ इतनी अधिक हो गयी है कि एकांत के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह गया है न बाहर न भीतर। तात्पर्य यह कि आज अजनबीयत, अकेलापन और ऊब से भरी यह विस्तृत दुनिया सिमटकर एक आँगन सी बन गयी है जहां चारों ओर अपने ही घर–परिवार के लोग, आत्मीय जन मौजूद हैं। उनकी आँखों में एक दूसरे के लिए प्रेम, भाईचारा, विश्वास, आत्मीयता के भाव झलक रहे हैं। इन भावों को महसूस करते हुए कवि का अंतः और बाह्य लबालब हो उठा है।

हर चीज का ———————— मुँह छिपा सकता हूँ।

प्रेमिका का सान्निध्य कवि को अत्यंत सामर्थ्यशील बनाता है। वह अपने भीतर अद्‌भुत क्षमता को महसूस कर पाने में समर्थ होता है। प्रियतमा के साहचर्य ने कवि में इतनी ऊर्जा भर देता है कि उसे संसार की हर वस्तु आकार में छोटी दिखाई पड़ती है। उसके लिए विशालकाय वृक्ष भी छोटे प्रतीत होते हैं। इतने छोटे कि कवि उन पेड़ों पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे सकता है। इतना ही नहीं, कवि की शक्ति इतनी व्यापक हो गयी है कि वह सर्वशक्तिमान की तरह आकाश से भी टकरा सकता है। प्रेयसी के संस्पर्श ने उसकी चेतना को झंकृत कर उसमें नवीन ज्ञान–विज्ञान और रहस्यों को जागृत करने में सफल रहा है। इससे उसकी चेतना आकाश तक व्याप्त हो गयी है। इसके तहत वह जब चाहे बादलों में अपना मुँह छिपाकर लुका–छिपी का खेल भी खेल भी खेल सकता है। प्रेयसी के संस्पर्श ने कवि में असंभावित को भी संभाव्य बनाया है।

तुम्हारे साथ रहकर ———————— चढ़कर चले जाने का।

प्रेयसी के साथ रहते हुए कवि ने आस–पास की सूक्ष्म से सूक्ष्म गतिविधियों को भी महसूस किया है। उसने प्रियतमा को संबोधित करते हुए कहा है – तुम्हारे साथ रहते हुए अक्सर मैंने महसूस किया है कि हमारी हर बात का एक मतलब होता है। एक निश्चित अर्थ होता है। इस पूरी प्रकृति में बिना कारण तथा मतलब के कोई भी क्रिया नहीं होती है। यहाँ तक कि अति उपेक्षित दिखने वाली घास के हिलने का भी कोई न कोई संकेत होता है। उसी तरह खिड़की से हवा का आना–जाना तथा दीवारों पर धूप का चढ़ना–उतरना भी बेवजह नहीं है। प्रकृति की यह स्वतःस्फूर्त क्रियाएँ ही जीवन को संचालित करती हैं। उसे अर्थवान बनाती हैं। कवि का आशय यह है कि प्रेयसी ने उसकी संवेदनाओं व भावनाओं को जागृत कर दिया है। इसके पहले कवि ने इन हलचलों को कभी महसूस नहीं किया था। प्रेम के सान्निध्य से कवि की भावुकता, आत्मीयता और सचेतनशीलता उद्दीप्त होती है। साथ ही कवि प्रकृति की विविध क्रियाओं को समझने की सूझ–बुझ भी प्राप्त करता है। प्रेमानुभूति की स्थिति में जड़ भी चेतनता को प्राप्त करता है।

तुम्हारे साथ रहकर ———————— गुजर सकता है।

प्रियतमा के साहचर्य से कवि में अपार संभावनाएँ भर देता है। निराशा के भाव छँटने लगते हैं। उम्मीदें और संभावनाएँ पनपने लगती हैं। कवि का कहना है कि प्रेमिका का साथ हो तो तमाम असमर्थताएँ संभावनाओं में तब्दील हो जाती हैं। नई स्फूर्ति, उत्साह तथा साहस का संचार होता है। हर दीवार में दरवाजा हो सकता है और उस दरवाजे से पूरा का पूरा पहाड़ गुजर सकता है। तात्पर्य यह कि तमाम मुसीबतें, बाधाएँ, आदि संभावना रूपी दरवाजे से दूर हो सकती हैं। साहचर्य अनंत शक्तियों से समृद्ध करता है। असंभव को भी संभव बना देता है। कवि की जीवन–दृष्टि का सुंदर परिचय इस पद्यांश से प्राप्त होता है।

शक्ति अगर सीमित ———————— नियति की नहीं मेरी है।

कवि का सामर्थ्य इच्छा–शक्ति के साथ मिलकर व्यापक रूप धारण कर लेता है। वह अनंत संभावनाओं का स्रोत अपने में महसूस करने लगता है। प्रियतमा के संग–साथ ने कवि में अद्‌भुत इच्छा–शक्ति उत्पन्न की है। उनका सामर्थ्य अनंत संभावनाओं के साथ पूरी सृष्टि को अपनी भुजाओं में बांध लेने को आतुर है। कवि को अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास है। इस संसार में ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे मनुष्य नहीं कर सकता है। जीवन में आनेवाली कठिनाइयाँ कभी भी मनुष्य के सामर्थ्य को पराजित नहीं कर सकती हैं। मनुष्य यदि चाहे तो वह सब कुछ कर सकता है। उसमें अनंत शक्तियों के स्रोत प्रवाहित होते हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड उसके समक्ष लघु प्रतीत होता है। यदि मनुष्य की शक्ति सीमित है तो प्रकृति का कठोर से कठोर तत्व भी अशक्त हो जाता है। उसकी भुजाओं का प्रसार जहां थम जाता है विशाल और अथाह सागर भी सिमटना आरंभ कर देता है। मनुष्य की इच्छा ही सामर्थ्य को जन्म देती है। इच्छा–शक्ति के बल पर ही मनुष्य संपूर्ण ब्रह्मांड को अपनी मुट्ठी में समाए रखने में समर्थ हुआ है। ज्ञान–विज्ञान की विविध परतों को उघाड़ कर रहस्यों का खुलासा करने में सफल रहा है। मानव जीवन में जीवन और मृत्यु के बीच जो कर्मभूमि है वह नियति द्वारा निर्धारित नहीं है, बल्कि मनुष्य द्वारा निर्मित है। उसका कर्म ही उसके जीवन को दिशा प्रदान करता है। भावार्थ यह है कि कवि को मनुष्य की शक्ति पर अगाध विश्वास है। कर्मवाद में उसका अपार विश्वास है। नियति और भाग्य को ठुकराया गया है।

18.3.3 'मेघ आए' कविता का वाचन और विश्लेषण

मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।

आगे–आगे नाचती–गाती बयार चली

दरवाजे–खिड़कियाँ खुलने लगी गली–गली

पाहन ज्यों आए हो गाँव में शहर के।

पेड़ झुक झांकने लगे गरदन उचकाए

आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए

बाँकी चितवन उठा नदी, ठिठकी, घूँघट सरके।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़ कर जुहार की

बरस बाद सुधी लीन्ही

बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की

हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।

क्षितिज अटारी गदराईदामिनी दमकी

क्षमा करो गाँठ खुल गयी अब भरम की

बांध टूटा झर–झर मिलन अश्रु ढरके

मेघ आए बड़े बन–ठन के, सँवर के

'मेघ आए' कविता में बादलों के आने की तुलना सजे–संवरे आए हुए प्रवासी अतिथि दामाद से की गयी है। ग्रामीण संस्कृति में दामाद का ससुराल में आना किसी उत्सव से कम नहीं होता है। दामाद का जिस प्रकार अतिथि–सत्कार होता है ठीक उसी तरह मेघों के आने पर गाँव वाले हर्ष और उल्लास से भरकर उनका स्वागत करते हैं। कवि ने इसका मनोरम चित्रण किया है।

व्याख्या :

मेघ आए ———————— घूँघट सरके।

इन पंक्तियों में कवि कहता है कि आकाश में बादल घिर आए हैं। बादलों को देखकर ऐसा लगता है कि कोई मेहमान शहर से सज–धज कर गाँव आ पहुँचे हैं। भारतीय संस्कृति में 'अतिथि देवों भव' का बड़ा महत्व है। अतिथि को देवता तुल्य माना जाता है। इसलिए गाँव में आए हुए इस अतिथि देवता के दर्शन करके गाँव वाले अतीव प्रसन्न हैं। अतिथि भी ऐसे हैं कि साल भर में एक–आध बार ही आते हैं। ऐसे अतिथियों का ख़ास स्वागत होता है। बादल भी सालभर के पश्चात पधारे हैं। बादलों के पहुँचने के पहले उनके आगमन की सूचना पुरवाई नाचते–गाते पूरे गाँव में प्रचारित कर देती है। पुरवाई के नाच–गान को देखने–सुनने के लिए खिड़की और दरवाजे खुलने लगते हैं। पुनः गाँव के लोग मेघरूपी दामाद को देखने के लिए खड़े रहते हैं। उल्लेख किया जा सकता है दामाद किसी परिवार का भले हो लेकिन पूरे गाँव के लोग उसे अपना दामाद मानते और समझते हैं। यानी दामाद किसी परिवार का ही नहीं बल्कि पूरे गाँव का होता है। बहरहाल, मेघों के आने पर पूरा गाँव, हवा और प्रकृति में उमंग, उत्साह और उल्लास भर जाता है।

अतिथि के आने पर जिस प्रकार लोग झुककर अभिवादन करते हैं और उनका कुशलक्षेम पूछते हैं ठीक उसी प्रकार बादलों को देखकर पेड़ हवा से पहले झुकते हैं और फिर आनंदित होकर डोलने लगते हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए ग्रामीण अतिथि को देख रहे हैं। धीरे–धीरे हवा आँधी में बदल गयी और धूल उड़ने लगी। धूल का गुब्बारा देखकर ऐसा लगता है जैसे कोई ग्राम की युवती किसी अनजाने व्यक्ति को देखकर अपना लहंगा समेटकर भागी चली जा रही है। बादलों का घिरना नदी के लिए भी शुभ समाचार है। वह भी थोड़ी देर के लिए ठहर कर घूँघट में से वंकिम नयनों में बादलों को निहारने लगती है।

बूढ़े पीपल ———————— सँवर के।

इन पंक्तियों में कवि का कहना है कि जिस प्रकार मेहमान के आगमन पर घर के वयोज्येष्ठ उनका स्वागत करते हैं, अभिवादन करते हैं, घर की बाहुएँ किवाड़ या दरवाजे की ओर में से उनसे स्नेहभरे संभाषण करती हैं अथवा लंबे अरसे से आने के लिए स्नेहपूर्ण शिकायत करती हैं उसी प्रकार मेघ रूपी अतिथि के आगमन पर बूढ़े पीपल ने स्वागत और अभिवादन किया। हवा के झोंकों से लताएँ लहराती रहीं। मानो वे शिकायत कर रही हैं कि आप लंबे अंतराल के बाद पधारे हैं।

पोखर–तालाब हर्षातिरेक में झूम रहे हैं मानो अतिथि के स्वागत हेतु परात भर के पानी ले आए हैं। मेघों के आने पर प्रकृति में प्रसारित हर्ष और उल्लास के वातावरण का जीवंत चित्रण किया गया है।

आकाश में बादल छा गए हैं। क्षितिज पर गहरे बादलों में बिजली चमकी और वर्षा शुरू हो गयी। झर–झर वर्षा होने लगी। इस भाव को कवि ने मेहमान और उसकी पत्नी के मिलन के रूप में चित्रित किया है। पति –पत्नी का मिलन हुआ। दोनों के मन की गाँठें खुल गयीं। सारे भेद मिट गए। दुविधाएँ दूर हो गयीं। ऐसी स्थिति में विरह का बांध टूट गया। इसी प्रकार अतिथि के आने के पश्चात की खुशी और मिलन के आंसू के रूप में वर्षा का सुंदर चित्रण किया गया है।

भारत एक कृषिप्रधान देश है। कृषि कार्य वर्षा पर आश्रित है। कृषकों की खुशियाँ, उनकी मनोकामनाएँ, उनका जीवन सब कुछ बरसात पर निर्भर है। इस संदर्भ में आप सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'बादल राग' पढ़ सकते हैं। बहरहाल आपने ध्यान दिया होगा कि इस कविता में कवि ने रूपक और मानवीकरण अलंकारों का कितना सुंदर प्रयोग किया है। जैसे, 'बोली सकुचाई लता', ''आगे–आगे नाचती चली बयार', 'बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की', 'पेड़ झुक झांकने लगे गरदन उचकाए' में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है। इसी तरह 'क्षितिज अटारी', 'बांध टूटा झर–झर मिलन के अश्रु ढरके', आदि में रूपक अलंकार है। पुनः कविता में सुधी लेना, बन–ठन के, बांध टूटना, गाँठ खुलना आदि मुहावरों के प्रयोग से कवि की अभिव्यक्ति सशक्त हुई है।

18.3.4 'मैंने कब कहा' कविता का वाचन और विश्लेषण

मैंने कब कहा
कोई मेरे साथ चले
चाहा जरूर !

अक्सर दरख़्तों के लिए
जूते सिलवा लाया
और उसके पास खड़ा रहा
वे अपनी हरियाली
अपने फूल फूल पर इतराते
अपनी चिड़ियों में उलझे रहे

मैं आगे बढ़ गया
अपने पैरों को
उनकी तरह
जड़ में नहीं बदल पाया

यह जानते हुए भी

कि आगे बढ़ना

निरंतर कुछ खोते जाना

और अकेले होते जाना है

मैं यहाँ तक आ गया हूँ

जहां दरख़्तों की लंबी छायाएँ

मुझे घेरे हुए हैं .....

किसी साथ के

या डूबते सूरज के कारण

मुझे नहीं मालूम

मुझे

और आगे जाना है

कोई मेरे साथ चले

मैंने कब कहा

चाहा जरूर !

साठोत्तरी दौर के कवियों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अपने युग की चुनौतियों से जूझने वाले कवि के रूप में जाने जाते हैं। वे एक संघर्षशील कवि हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक आतंक, आर्थिक वैषम्य और धार्मिक पाखंडों का निषेध है। उन्हें पता है कि व्यापक जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जनसमूह का सहयोग और योगदान बहुत आवश्यक है। उनकी चाहत है कि समाज का उन्हें सहयोग प्राप्त हो। लेकिन इसके लिए वे प्रतीक्षा करना नहीं चाहते बल्कि पूरे आत्मविश्वास, निष्ठा और संकल्प शक्ति के साथ आगे बढ़ना पसंद करते हैं। स्मरण कीजिए, रवींद्रनाथ ठाकुर ने लिखा है 'यदि तोर डाक सूने केउ ना आसे तोबे एकला चलो रे।' अर्थात, यदि तुम्हारी पुकार सुनकर कोई न आए तो तुम अकेले चल पड़ो।'मैंने कब कहा' कविता की भाषा सरल एवं बोलचाल की भाषा है। इसकी शैली संवादात्मक है।

व्याख्या :

मैंने कब कहा ———————— जड़ में नहीं बदल पाया।

सामाजिक उत्थान के अभियान में पूरे समाज को साथ लेकर चलने का प्रयास हो तो वह सफल होता है। अपने व्यापक लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए कवि चाहता तो है कि समाज के सभी वर्गों के लोग इसमें शामिल हों लेकिन, वह किसी को भी अपने साथ चलने के लिए नहीं कहता। यह इसलिए कि स्वतःस्फूर्त होकर आने वाले ही कठिन मार्ग के राही हो सकते हैं।

समाज में एक वर्ग ऐसा है जो विशिष्ट है, अनुभवी भी। उनमें सामाजिक नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता भी है। परंतु वे अपने जीवन में समृद्धि के लिए ही उलझे रहते हैं। घर–परिवार और आत्मीय लोगों की उपलब्धियों को अपना जीवन वैभव मानकर गौरवान्वित होते हैं। इसे ही जीवन का लक्ष्य मानकर चलते हैं। ऐसे लोगों को अपने निजी जीवन में सिमटे हुए देखकर कवि ने 'अपनी हरियाली' और 'फूल– फूल पर इतराते' की तुलना की है। ऐसी स्थिति में वह निराश हो आगे बढ़ जाता है। उन लोगों की तरह कवि अपने पैरों को जड़ यानी पुरानी सोच में सिमटाए बिना आगे बढ़ना उचित समझता है। आगे बढ़ना गतिशीलता है और पैरों को जड़ बनाए रखना स्थिरता है, जड़ता है। ऐसे भद्र लोगों की प्रतीक्षा कवि करना नहीं चाहता है। इसलिए व्यापक सामाजिक लक्ष्य हेतु आगे बढ़ना उचित समझता है। कवि की संकल्प शक्ति उसे संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। कवि को अपने व्यापक लक्ष्य की पूर्ति के लिए समाज के जिन जिम्मेदार तथाकथित भद्र लोगों का सहयोग काम्य था वे अपनी जड़ता में लिप्त हैं। वे अपने निजी स्वार्थ से रची–बसी सीमित दुनिया के बाहर आना नहीं चाहते हैं। वे उस संसार में ही खुश हैं और परम प्रसन्न। दरअसल, यह उनकी जड़ मानसिकता है। कवि की चेतनशील जीवन दृष्टि ने उसके पैरों को जड़ता से मुक्त किया है। इसलिए वह उन प्रतिष्ठित लोगों की प्रतीक्षा किए बिना आगे बढ़ता है। भले ही, सामाजिकों के असहयोग से उसे निराशा हुई है।

यह जानते हुए भी ———————— चाहा जरूर।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का जीवन दर्शन पाठकों के समक्ष उजागर होता है। उसका कहना है कि मनुष्य अपनी संकल्प शक्ति को आधार बना कर जितना आगे बढ़ता है उतना अकेला पड़ता जाता है और अपना बहुत कुछ खोता भी जाता है। लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग कठिन होता है। इस मार्ग के राही को अपने वैयक्तिक सुख– सुविधाओं को तिलांजलि देनी पड़ती है। अनेक तरह के प्रतिरोधों का सामना करना पड़ता है। व्यंग्य तथा आक्षेपों को भी सहना पड़ता है। कवि का कहना है कि वह आगे बढ़ते हुए वहाँ पहुँच गया है जहां 'दरख़्तों' के रूप में वृक्षों की लंबी छाया उसे घेरे खड़ी है। उसे मालूम है कि आज उसके साथ तथाकथित सामाजिकों का साथ होने का केवल भ्रम मात्र है। लेकिन उसे रुकना नहीं है, आगे बढ़ना है। चाहे कोई कवि का साथ दे अथवा नहीं, उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आगे बढ़ना है। उसे अपने अभियान में किसी के संग–साथ की उम्मीद हो अथवा ढलते जीवन–चक्र की संपूर्णता का सुखद अहसास। कवि निश्चित नहीं कर पाता है कि उसे और कितना आगे चलना है। लेकिन, उसकी संकल्पबद्धता सुदृढ़ है। वह हर परिस्थिति में अपने मार्ग पर चलते रहने के लिए कटिबद्ध है। कवि की इच्छा अवश्य है कि उसकी संघर्ष यात्रा के साथी समाज के सभी वर्ग के लोग बनें लेकिन उसने यह उचित नहीं समझा है कि उनकी प्रतीक्षा में वह स्वयं जड़ बन जाए।

18.3.5 'हम साथ ले चलेंगे' कविता का वाचन और विश्लेषण

आपने रघुवीर सहाय की कविताओं में निहित राजनीतिक चेतना के बारे में पढ़ लिया होगा। उनकी 'राष्ट्रगीत' अथवा 'रामदास' कविताओं में राजनीतिक चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। 'हम साथ ले चलेंगे' शीर्षक कविता भी सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की राजनीतिक चेतना प्रस्तुत करती है। आपने सर्वेश्वर को प्रेम, प्रकृति, पर्यावरण, आदि संवेदनाओं के कवि के रूप में इस इकाई में पढ़ चुके हैं। लेकिन इस कविता में कवि की भिन्न संवेदना से आप रू–ब–रू हो सकेंगे।

आप जानते हैं कि हमारे देश की आजादी के इतने वर्ष बाद भी हम अपनी आधारभूत सुविधाओं से वंचित हैं। देश में विकास का डंका तो खूब बज रहा है लेकिन असली विकास चंद लोगों के कब्जे में है। प्रति पाँच वर्ष के अंतराल में राजनेता नागरिकों को लुभाने के लिए मंचों से बड़े लुभावने वायदे करते हैं। लेकिन जैसे ही चुनाव संपन्न हो जाता है, वे जनता को दिखाए गए सपने और उनके समक्ष की गई प्रतिज्ञाओं को भुला बैठते हैं। वे जुट जाते हैं अपने और अपने परिवार के

विकास के लिए। देश में प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए कवि ने 'हम साथ ले चलेंगे' की रचना की है। इस कविता की शैली व्यंग्यात्मक है। सत्ता पर आरूढ़ राजनेताओं पर कवि का आक्रोश भी इस कविता में स्पष्ट परिलक्षित होता है। सत्ता और व्यवस्था के दमन, शोषण, अत्याचार, स्वार्थपरता, चालाकियाँ और वीभत्स रूप को भी जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। नेताओं के दोगलेपन, कथनी और करनी में अंतर आदि को भी कवि ने नहीं भुलाया है।

सच है कि भारत एक जनतांत्रिक राष्ट्र है और इसका अपना संविधान भी है। लेकिन, हक़ीक़त कुछ और है। राजनीति ही नहीं, हमारी व्यवस्था भी भ्रष्ट हो चुकी है। मुट्ठीभर लोगों के हाथ सत्ता और तमाम सुख–सुविधाएँ हैं। देश में दिनोदिन गरीबी बढ़ती जा रही है। बेरोजगारी चरम पर है। आम जनता पीड़ित है। सत्तासीन निश्चिंत हैं।

आपने बस–अड्डे, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों में सामान ढोने वाले कुलियों को देखा होगा। ये लोग बड़े अनुनय–विनय के साथ आपके सामान आपके गंतव्य तक पहुँचा देने का वादा करते हैं। इसी तरह चुनावी मौसम में राजनेता मंचों से खूब चिकनी–चुपड़ी बातें करते हैं और वादा करते हैं कि यदि वे विजयी हुए तो जनता की सारी समस्याओं का समाधान कर देंगे। वस्तुस्थिति यह है कि अगले चुनाव तक जनता उनके दर्शन के लिए तरसती रहती है। कुली सामान गंतव्य तक पहुँचाने के बाद किराए को लेकर कहा–सुनी करता है। लेकिन नेता विजयी हो जाने के बाद जनता की तरफ मुंह उठाकर देखना भी मुनासिब नहीं समझता। कुली मुसाफिर को कभी–कभी ठग लेते हैं। सामान लेकर भीड़ में कहीं गायब हो जाते हैं। ऐसे कुली संख्या में कम हैं। लेकिन राजनेता ईमानदार कम ही मिलते हैं। जो राजनेता सच्चा, ईमानदार और जनता का सही अर्थ में सेवक होते हैं, हमारी व्यवस्था उन्हें कुचल कर ही रख देती है। कुली और राजनेता को समान धरातल पर खड़ा करते हुए कवि ने राजनीतिक व्यवस्था पर गहरा आक्रोश व्यक्त किया है।

कवि ने आगे कहा है कि कुछ कुली इतने चालाक और धूर्त होते हैं कि यात्री का सामान अपने सिर से गायब कर देते हैं अथवा सामान सहित कहीं गायब हो जाते हैं जबकि उन्होंने यात्री का सामान सही सलामत पहुँचाने का वादा किया था। इसी तरह राजनेता मंच से जनकल्याण, सामूहिक विकास आदि का दावा करने वाले जनता के सवालों तक का जवाब नहीं देते। अपना कल्याण और अपनी समृद्धि ही उनके लिए सर्वोपरि है। जनता की समस्या को सुलझाने में कोई दिलचस्पी नहीं लेते। हाँ, झूठे वादे करने में वे पीछे नहीं रहते। लोगों को भरमाए और भटकाए रखते हैं।

आजादी के लगभग पचहत्तर साल में भी देश कभी अकालपीड़ित रहता है तो कभी सूखे के प्रभाव से तड़पता रहता है। कीड़े–मकौड़े की तरह लोग मरने लगते हैं। गाँव का गाँव उजड़ जाता है। कवि ने इस कविता में बड़े प्रभावशाली ढंग से चित्रित करते हुए लिखा है कि जिस तरह किसी अकाल और सूखे से बर्बाद हो चुके गाँव की सीमा पर एक कुत्ता भूख और प्यास से दम तोड़ देता है, ठीक उसी तरह भारतीय समाज व्यवस्था में जनता के सवाल और उनकी समस्याएं न केवल उपेक्षित हैं बल्कि वे काल–कवलित हो रहे हैं। जो हश्र लावारिस कुत्ते का होता है वैसी दशा जनता की समस्याओं की होती है। जनता के सवालों से कोई मतलब ही नहीं रह गया है हमारी राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था में सत्ता से सवाल करने का मतलब कुछ और बन गया है। प्रश्न पूछा गया अथवा समस्याएँ सामने लायी गयीं तो सत्ता इसका अर्थ समझती है कि आप पवित्रता को नष्ट कर रहे हैं। विधायिका को कलुषित कर रहे हैं। गंदगी फैला रहे हैं। पर तुर्रा यह कि विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है भारत लावारिस कुत्ते की तरह जनता उपेक्षित हो कर मरे तो क्या राजनेताओं के भोग–विलास और आनंद में किसी तरह की कोई बाधा नहीं आनी चाहिए।

इस तरह हम कह सकते हैं कि यह कविता सर्वेश्वर की जनप्रतिबद्धता, प्रगतिशीलता, सामूहिक विकास, और जन कल्याण की कामना प्रकट करने वाली कविता है। इसमें राजनीतिक व्यवस्था के प्रति कठोर व्यंग्य है। 'हम साथ ले चलेंगे'आम जनता की पीड़ा और समस्याओं के प्रति कवि की संवेदनशीलता का भी सुंदर उदाहरण है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. रघुवीर सहाय की कविताओं में निहित राजनीतिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

   .....

   .....

   .....

2. रघुवीर सहाय की कविताओं में सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

   .....

   .....

   .....

3. रघुवीर सहाय की स्त्री– दृष्टि पर विचार कीजिए।

   .....

   .....

   .....

4. रघुवीर सहाय की कविताओं की संप्रेषणशीलता पर आलोकपात कीजिए।

   .....

   .....

   .....

5. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं की मूल संवेदना पर सोदाहरण विचार कीजिए।

   .....

   .....

   .....

6. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के कवि–कर्म का विवेचन कीजिए।

   .....

   .....

   .....

7. सर्वेश्वर दयाल सकेसना की कविताओं की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।

   .....

   .....

   .....

8. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं का भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY